RP FINAL VALUE EDUCATION MPN SL.docx

Mizoram University

Document Details

Submission ID

trn:oid:::10015:145893438

Submission Date

Jul 18, 2026, 8:58 PM GMT+5:30

Download Date

Jul 18, 2026, 9:00 PM GMT+5:30

File Name

RP FINAL VALUE EDUCATION MPN SL.docx

File Size

43.1 KB

9 Pages

3,010 Words

13,732 Characters

5% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
5% Submitted works (Student Papers)

Integrity Flags

0 Integrity Flags for Review

No suspicious text manipulations found.

Our system's algorithms look deeply at a document for any inconsistencies that would set it apart from a normal submission. If we notice something strange, we flag it for you to review.

A Flag is not necessarily an indicator of a problem. However, we'd recommend you focus your attention there for further review.

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
5% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1	Submitted works	
	College Faculty Members on 2026-05-04	<1%
2	Submitted works	
	College Faculty Members on 2026-06-11	<1%
3	Submitted works	
	IMS Unison University on 2026-04-10	<1%
4	Submitted works	
	Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala on 2026-07-17	<1%
5	Submitted works	
	College Faculty Members on 2026-05-09	<1%
6	Submitted works	
	Liverpool John Moores University on 2026-04-07	<1%
7	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-07-07	<1%
8	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-05-03	<1%
9	Internet	
	www.coursehero.com	<1%
10	Submitted works	
	College Faculty Members on 2026-03-30	<1%
11	Submitted works	
	Nims University Rajasthan, Jaipur on 2026-07-06	<1%

12 Submitted works

College Faculty Members on 2026-05-09 <1%

13 Submitted works

College Users IQAC, Library, Others on 2026-05-10 <1%

14 Submitted works

College Users IQAC, Library, Others on 2026-05-12 <1%

15 Submitted works

University of Delhi on 2026-04-26 <1%

16 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-12 <1%

17 Submitted works

College Faculty Members on 2026-05-05 <1%

18 Submitted works

Pacific University on 2019-03-16 <1%

19 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-06 <1%

20 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-07 <1%

मूल्य शिक्षा: बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों के लिए

डॉ. मनोज प्रसाद नौटियाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
हे.न.ब.गढ़वाल(केंद्रीय) वि.वि. (एस आर टी परिसर)
बादशाही थौल टिहरी, उत्तराखंड

श्री श्याम लाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,बी.एड.विभाग
श्रीदेव सुमन उत्तराखंड वि.वि. परिसर
रा.स्ना.म.वि. गोपेश्वर, चमोली उत्तराखंड

सारांश

मूल्य परक शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र को अनेक प्रकार की बुराई, हिंसा, भ्रष्टाचार तथा उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है। किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा प्राण हैं तथा जीवन मूल्य उसकी आत्मा, मूल्यों का सम्बन्ध जीवन के दृष्टिकोण से है यदि मूल्यों को जीवन कहा जाय तो अतिश्योक्ति नही होगी। मूल्यों की अवधारणा से तात्पर्य सिद्धान्त, आदर्श, तथा नैतिकता से है। मूल्यों का विकास समाज में होता है तथा सामाजिक सम्पर्क द्वारा नैतिक विकास होता है। मूल्य अभिवृत्तियाँ एवं आदर्श हमारे व्यवहार को निर्देशित करते है। मूल्यों से अभिप्रेरणा को दिशा मिलती है। आज के जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मूल्य वे होते है जो सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम् से ओत-प्रोत होते है और व्यक्ति के व्यवहार में समाहित हो जाते हैं, हमारे जीवन को आनन्दमय, सुखदायी बनानें में मूल्यों का महत्व अतुलनीय है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में मूल्य शिक्षा की अवधारणा तथा वर्गीकरण एवं मूल्यों का जीवन में महत्व और मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

"वर्तमान समय बाजार का दौर है इसलिए इसमें मौजूदा शिक्षा पद्धति की सामाजिक भूमिका कम हो जाती है। आज ज्यादातर लोग सिर्फ नौकरी के लिए पढ़ाई करते हैं, विश्वविद्यालयों की यह जिम्मेदारी होती है कि वह छात्रों के अंदर छिपी प्रतिभा तलाश कर उसके हिसाब से ज्ञानार्जन के लिए सही मार्गदर्शन करें। विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थान के अध्यापकों को चाहिए कि वे छात्रों को किताबों के साथ-साथ नैतिक ज्ञान भी दें। हर शिक्षण संस्थान को प्रयास करना चाहिए कि वह छात्रों की शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश कर अपनी सामाजिक भूमिका का निर्वाह करें। कोई भी शिक्षण संस्थान यदि अपनी सामाजिक भूमिका के बिना चलता है तो यह न सिर्फ छात्रों के लिए बल्कि हमारी सामाजिक व्यवस्था के लिए भी हानिकारक है।" -के सच्चिदानंदन

बी.एड. के प्रशिक्षणार्थी

छात्राध्यापक एक ऐसी अवस्था है कि जब वह छात्र और शिक्षक का दायित्व साथ-साथ निभाता है, एक तरफ वह सैद्धान्तिक ज्ञान को प्राप्त करता है तो वह छात्र की भूमिका में रहता है और जब वह व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा होता है अर्थात् वास्तविक कक्षा में होता है तो वह शिक्षक की भूमिका में होता है। जहाँ उसके कंधों पर दोनों दायित्व होते हैं। इसलिए उसकी जिम्मेदारी दोगुनी हो जाती है। ऐसी अवस्था वाले विद्यार्थियों को यदि हम व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ मूल्य शिक्षा भी दें तो अधिक कारगर सिद्ध होगा। क्योंकि उसमें मूल्य शिक्षा के कारण व्यवहारिक परिवर्तन आयेगा जो
18 उसके संगे साथियों को उसके जैसे बनने के लिए प्रेरित करेगा और जब वह भविष्य में शिक्षक बनेगा तो जिन विद्यार्थियों को वह शिक्षा देगा तो वे विद्यार्थी निश्चित तौर पर मूल्यवान होंगे।

मूल्य शिक्षा की अवधारणा

मूल्य शिक्षा की अवधारणा अभी नूतन है। इसीलिए इसकी परिभाषा, पाठ्यक्रम एवं विधियों आदि का
13 अभी निर्धारण नहीं हो सका है। कुछ शिक्षाविद भी मूल्यों की शिक्षा को एक विषय के रूप मान्यता दिए जाने के पक्ष में नहीं हैं। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि इससे पूर्व मूल्य शिक्षा की आवश्यकता अनुभव नहीं की गई थी क्योंकि प्रारम्भ में समाज अत्यन्त सरल था और समाज के लोग धर्म, मान्यताओं, परम्पराओं और शाश्वत मूल्यों का अनुपालन करते हुए जीवन यापन करते थे। वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं में अभिवृद्धि हुई। आगे बढ़ने और आधुनिकता की दौड़ में आगे निकलते जाने की दुर्भावना ने मनुष्य को धर्म, मान्यताओं, परम्पराओं और शाश्वत मूल्यों की उपेक्षा करने को विवश किया और धीरे-धीरे उन्हें छोड़ दिया गया। आज धर्म,
1 20 मान्यताएँ, परम्पराएँ और मूल्यों रहित समाज एवं शिक्षा की जो स्थिति है, उसे स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। इसके दुष्परिणामों से धर्माचार्य, शिक्षाविद्, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, शिक्षक एवं अभिभावक सभी चिन्तित हैं। इसीलिए अब मूल्यों की शिक्षा दिए जाने का विचार उत्पन्न हुआ ताकि मूल्य आधारित समाज का पुनः सृजन हो सके।

मूल्य शिक्षा का अर्थ- अंग्रेजी में Value कहते हैं और Value लैटिन भाषा के शब्द valere (वैलियर) से बना है वैलियर का अंग्रेजी में अर्थ है ability, utility, importance तथा हिन्दी में अर्थ योग्यता, उपयोगिता व महत्व, मूल्य का अर्थ - वह मान, जिसके आधार पर हम किसी व्यक्ति, वस्तु या किसी
17 सूक्ष्म सत्ता (भाव-विचार आदि) के गुण योग्यता व महत्व को आंकते है। मैनी (2005) के अनुसार "देश,

काल, परिस्थिति के सन्दर्भ में जन सामान्य मान्यताएं ही मूल्य बन जाती है मूल्य अभिवृत्तियों एवं आदर्श हमारे व्यवहार को निर्देशित करते हैं" मूल्यों से अभिप्रेरणा को दिशा मिलती है। हमारे व्यवहार का नियंत्रण करने में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ये अभिप्रेरणा को शक्ति देते है आवश्यकताओं की सम्पुष्टि के स्वरुप को निर्धारित करने में निर्णायक का कार्य करते है। हम सहयोग करेंगे अथवा असहयोग, सहनशील होंगे अथवा भयभीत, यह हमारे विचारों पर ही निर्भर नहीं करता वरन् यह हमारे मूल्यों द्वारा हमारे स्थायी भावों तथा अर्जित परिमार्जित मूल्य प्रवृत्तियों के द्वारा निश्चित होता है। मूल्यों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है पेरी ने मूल्यों को नकारात्मक, सकारात्मक विकासवादी, वास्तविक आदि श्रेणी में विभाजित किया है उसी प्रकार कुछ विद्वानों ने मूल्यों को सुखवादी, सौन्दर्यवाद, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक तथा तार्किक मूल्यों में बांटा है। सक्सेना (2000), आलपोर्ट एवं वर्नन ने मूल्यों को स्प्रेंगर के वर्गीकरण के आधार पर छः श्रेणियों में विभक्त किया है- (अ) सैद्धान्तिक मूल्य सत्य आधारित कार्यों में रूचि लेना (ब) आर्थिक मूल्य- उपयोगी, व्यावहारिक तथा द्रव्य जनित कार्यों में रूचि लेना। (स) सौन्दर्यात्मक मूल्य-कलात्मक पहलुओं में रूचि लेना (द) सामाजिक मूल्य- दूसरों की सहायता में रूचि लेना (य) राजनैतिक मूल्य-पद, प्रभुत्व तथा शक्ति रखने में रूचि लेना । धार्मिक मूल्य- आध्यात्मिक कार्यों में रूचि लेना। अन्जना (2011) जे.ई. टर्नर ने मूल्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया गया है- (अ) मूर्त मूल्य-वस्तुगत रूचियों को कहा जाता हैं। (ब) अमूर्त मूल्य- विचारगत रूचियाँ कहलाती हैं।' सिंह (1997) अरवन के अनुसार मूल्य विभाजन निम्न प्रकार है- (अ) जैविकीय मूल्य-इनमें शारीरिक, आर्थिक तथा मनोरंजन सम्बन्धी मूल्य आते हैं (ब) परा- जैविक मूल्य- इस श्रेणी में बौद्धिक, धार्मिक तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य आते हैं। (स) सामाजिक मूल्य- इसमें चरित्र तथा परस्पर प्रेम के मूल्य आते हैं।" इस वर्गीकरण के अतिरिक्त भारत में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली (National Council of Educational Research and Training. NCERT) ने जो मूल्यों की सूची जारी की है वह बड़ी लम्बी है तथा उनके द्वारा दर्शाये गए मूल्यों की सूची में 83 मूल्य बताए गए हैं। इस लम्बी सूची का श्रेणीकरण किया जाना आवश्यक | श्रेणीकरण के बाद सूची, लघु रूप में देखी जा सकती है। यह श्रेणीकरण वैयक्तिक, शैक्षिक, सामाजिक, चारित्रिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक तथा सौन्दर्यात्मक के रूप में किया जा सकता है।

मॉरिल के अनुसार-मूल्यों को चयन के उन मानदण्डों तथा प्रतिमानों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो व्यक्तियों एवं समूहों को संतोष, परितोष तथा अर्थ की ओर निर्देशित करते हैं।

शिक्षा का अर्थ – Education का शाब्दिक अर्थ है- शिक्षा-शब्दकोश में शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "शिक्षा सभी प्रक्रियाओं का योग है, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति समाज, जिसमें वह रहता है, उसकी योग्यताओं, दृष्टिकोणों एवं सकारात्मक मूल्यों के व्यवहार के अन्य रूप विकसित करती है।" शिक्षा व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह व्यक्ति की संवेदनशीलता एवं सृष्टि को प्रखर करती है, जिससे राष्ट्रीय एकता पनपती है। यह व्यक्ति में वैज्ञानिक तरीकों के प्रयोग की सम्भावनाओं को बलवती बनाती है, जिससे व्यक्ति में समझ और स्वतंत्र चिन्तन की क्षमता बढ़ती है। यह व्यक्ति को सत्य निष्ठा, कर्तव्य निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों के निर्वहन हेतु प्रशिक्षित करती है।

उपर्युक्त मूल्य और शिक्षा के अर्थ के विवेचन से स्पष्ट हो गया है, कि मूल्य एक प्रकार के मानक हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति चयनित व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने के लिए दिशा-निर्देश प्राप्त करता है और शिक्षा बालक की मूल प्रवृत्तियों में परिमार्जन कर उसके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाती है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा वह शिक्षा है, जो धार्मिक निरंकुशता, धार्मिक कट्टरता, हिंसा, अन्धविश्वास और भाग्यवाद का अन्त करने में सहायता करती है और हमारी विरासत, राष्ट्रीय लक्ष्यों एवं सार्वभौम दृष्टि पर बल देती है।

मूल्य परक शिक्षा के उद्देश्य एवं कार्य

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य व कार्य निम्नलिखित हो सकते हैं-

1. छात्रों को राष्ट्रीय लक्ष्यों जैसे समाजवाद, पंथ-निरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता एवं लोकतंत्र का सही अर्थों में बोध कराना।

2. छात्रों को देश का जागरूक, सम्भ्रान्त एवं उत्तरदायी नागरिक बनाने हेतु प्रशिक्षित करना।

3. छात्रों में परस्पर सहयोग, दृढ़ता, कर्त्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी बन्धुत्व आदि मौलिक गुण विकसित करना ।

4. छात्रों में अपने देश, धर्म, संस्कृति एवं मानवता के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित करना।

5. छात्रों को देश की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दशाओं की जानकारी करने हेतु प्रेरित करना और अपेक्षित सुधार करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना ।

मूल्य शिक्षा के मार्गदर्शक सिद्धान्त

विद्यालयों में मूल्य शिक्षा प्रदान करने के लिए निम्नलिखित मार्गदर्शक सिद्धान्तों को दृष्टिगत रखना आवश्यक है-

1. चूँकि मूल्य शिक्षा धार्मिक शिक्षा से अलग है इसलिए मूल्य शिक्षा देते समय धर्म पर बल नहीं दिया जाना चाहिए।

2. संविधान में निर्देशित मूल अधिकार एवं कर्तव्य मूल्य शिक्षा के केन्द्र बिन्दु होने चाहिए।

3. देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति के अनुरूप मूल्य शिक्षा क्रियान्वित की जानी चाहिए।

4. मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्वतंत्र विषय के रूप में स्थान दिया जाना सम्भव नहीं है, इसीलिए विभिन्न विषयों की विषयवस्तु में मूल्यों की शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

5. परिवार एवं विद्यालय का वातावरण छात्रों में मूल्यों की अभिवृद्धि को प्रभावित करने वाला होना चाहिए।

6. छात्रों को सभी शिक्षकों द्वारा मूल्य शिक्षा दी जानी चाहिए।

अथर्ववेद में ऋषि जब पूरी जिज्ञासा एवं गहन भाव से "कस्मै देवाय हविषा विधेम"-"हम किस देवता को हवि समर्पित करें का प्रश्न उठाता है तो हमें यह संकेत भी मिलता है कि मानव स्वरूप एवं स्वयं की

पहचान, कैसे जीवन एवं जगत के प्रति हमारी दृष्टि को निर्धारित करती है। ऋषि की समस्या यह थी कि जब हमारे समक्ष अनेक देवता है, तो हम किसे 'हवि अर्पित करें, अथवा दूसरे शब्दों में हमारा व्यवहार किस देवता के प्रति सकरात्मक होना चाहिए। इस प्रश्न का स्वयं उत्तर देते हुए ऋषि कहते है कि जो स्वयं का बोध कराता है, बल देता है, जिसकी छाया में मृत्यु एवं अमरत्व है, जिसकी सत्ता सृष्टि के पूर्व थी, हमेशा रहती है, हम उसी की आराधना करें। अर्थात् स्पष्ट है कि "स्वयं का बोध" ही वह सूत्र है जो हमारे समक्ष सब कुछ उद्घाटित करने में समर्थ है। अथर्ववेद का निहितार्थ है कि "स्वयं को जानना" । आत्मावलोकन ही सबको जानना है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सर्वप्रथम यह जाने कि मनुष्य होने का क्या अर्थ है? 'को, हम्', मैं कौन हूँ? यह प्रश्न उस समय से मनुष्य को व्यथित करता रहा है, जब से वह 'आत्म-चेतन सत्ता के रूप में अस्तित्व में आया है। आत्म-चेतना के कारण मनुष्य के समक्ष 'अहम्', 'तत् 'स्व' और 'पर का द्वंद्व उत्पन्न होता है। मनुष्य न केवल तू को समझना चाहता है, अपितु मैं को भी जानना चाहता है। 'तू' के अन्तर्गत समस्त चराचर जगत आता है, यदि हम यह जानते है कि 'तू', 'मैं' से नितान्त भिन्न नहीं है तो उससे हमारा व्यवहार गुणात्मक रूप से उस व्यवहार से भिन्न होगा, जिसमें यदि हम तू' और 'मैं को मौलिक रूप से भिन्न मानते है। जीवन एवं जगत हमें प्रदत्त रूप में प्राप्त हैं, हम स्वयं को किस रूप में जानते हैं वही उनके प्रति हमारे व्यवहार का निर्णायक होता है।

मानव स्वरूप की अवधारणा

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च, सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।

ज्ञानम् ही एकमधिको विशेषः ज्ञानेन हिनाः पशुभिः समाना।।

आहार, निद्रा, भय, संतति पैदा करना सामान्य रूप से पशुओं और मनुष्यों में समान गुण है लेकिन ज्ञान एक ऐसा गुण है जो मनुष्य को पशुओं से भिन्न बनाता है अर्थात् मानव बनाता है।

पशुओं की तुलना में मनुष्य का स्वयं एवं अपने वातावरण के ऊपर एक प्रकार का चेतन नियन्त्रण होता है जहाँ पशु अपने वातावरण के प्रति निष्क्रिय रूप में, उसके एक अंश के रूप में सचेत रहता है, वहीं मनुष्य अपने बाहय एवं आन्तरिक सम्पूर्ण वातावरण के प्रति सचेत रहता है। मानव चेतना का विषय है तथा मनुष्य स्वयं उस विषय का अध्येता या विषयी है। पशु अपनी क्रिया के साथ अभिन्न होता है, क्योंकि वह स्वयं को उससे अलग नहीं कर पाता। इसके विपरीत मनुष्य में अपने जीवन की क्रिया को अपनी इच्छाशक्ति एवं चेतना से प्रभावित करने की क्षमता है।

मानव स्वरूप की परिभाषा:

मानव स्वरूप की कोई एक एवं सरल परिभाषा नही दी जा सकती है। दर्शन शास्त्र के इतिहास से ज्ञात होता है कि विभिन्न देश एवं काल में मनुष्य को समझने का प्रयास हुआ है। कभी मनुष्य को देवता के रूप में समझा गया तो कभी उसे पशुओं की ही बृहत् श्रृंखला की विकसित प्रजाति के रूप में समझा गया। इन्हीं दोनों दृष्टियों के द्वन्द्व के द्वारा मनुष्य एवं उसके वातावरण के मध्य सम्बन्ध को विश्लेषित किया जा सकता है। मनुष्य की बुद्धि की यह सामर्थ्य है, कि वह देश एवं काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर उस स्थिति से ऊपर उठकर सोच सकता है। मनुष्य की इस क्षमता में ही देवत्व के बीज देखे गये हैं, जैसा कि पहले बता चुके है कि पशु अपनी क्रिया से अपने को अलग नहीं कर पाता है, क्योंकि वह मात्र चेतन होता है जबकि मनुष्य 'आत्म-चेतन होने के कारण स्वयं एवं स्वयं की क्रिया में भेद कर सकता है। मनुष्य का यह स्वयं में क्या है? इसे ही प्रायः 'आत्मा' की संज्ञा देते हुए वास्तविक मनुष्य के रूप में समझा गया, जिसमें अपनी परिस्थितियों को नियंत्रित करने की क्षमता है। लेकिन इस स्वतंत्र, स्वायत्त 'आत्मा की सत्ता पर आधुनिक युग के अनेक चिंतकों ने आपत्ति की है। इनकी दृष्टि में मनुष्य के स्वरूप के निर्धारण में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का योगदान होता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य के पास कोई पूर्व निर्धारित, देश एवं काल से परे स्वरूप नहीं होता है। वह 'आत्मा' जिसे मनुष्य का वास्तविक स्वरूप समझा जाता रहा है उस पर अनेक दिशाओं से प्रहार हुए हैं, और यह विश्वास कि मनुष्य एक भौतिक, शाश्वत आत्मा है। आधुनिक चिन्तन में ऐसा प्रतीत होने लगा है कि 'मनुष्य' के 'अहम्' के निर्माण में बहुत से बाह्य कारकों का योगदान होता है और 'मनुष्य' का स्वरूप बाह्य कारकों से निर्मित एवं उस पर निर्भर होता है।

मानव स्वरूप को जानने की आवश्यकता :

मानव स्वरूप का विश्लेषण इसलिए आवश्यक है क्योंकि मानव स्वरूप की हमारी समझ हमारे राजनीतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व्यवहार को प्रभावित करती है। मनुष्य एक शरीर है अर्थात् मनुष्य की एक भौतिक सत्ता है। इसी के साथ यह भी एक तथ्य है कि हम एक आत्म-चेतन सत्ता भी हैं। आत्म-चेतन होने के कारण मनुष्य अपनी भौतिक सत्ता का अतिक्रमण भी कर सकता है। सीमित से हम असीमित की तरफ यात्रा कर सकते हैं। यदि हम स्वयं को भौतिक सत्ता के रूप में समझे तो निश्चित ही हमारा व्यवहार इस सत्ता के दायरे तक ही सीमित रहेगा। हमारा समस्त क्रिया-कलाप ऐसा होगा जिससे हमारे शरीर को अधिकाधिक सुख प्राप्त हो, इन्द्रियों की संतुष्टि हमारा परम ध्येय होगा। जो शरीर को, इन्द्रियों को प्रीतिकर लगे वही हमारे लिए 'मूल्य' होगा, साध्य होगा। प्रीतिकर ही श्रेष्ठ के रूप में

स्थापित होगा। मानव शरीर को ही मानव स्वरूप का केन्द्र मानने वाले चिंतको की दृष्टि में प्रत्येक मनुष्य सदैव सुख की ही कामना एवं खोज करता है, अर्थात् मनुष्य के समस्त कर्म सुख प्राप्ति के हेतु से ही प्रेरित होते है। मनुष्य के प्रत्येक कर्म के पीछे अधिकतम सुख प्राप्त करने की ही इच्छा निहित होती है। इस दृष्टि से मनुष्य को सुख प्रदान करने वाला कर्म ही 'शुभ', 'वांछनीय एवं श्रेयस है तथा दुख देने वाले कर्म 'अशुभ', त्याज्य हैं। ऐसे सभी विचारों को अपरिष्कृत तथा स्थूल सुखवाद भी कहा जाता है, क्योंकि इस विचार के अनुसार बौद्धिक या मानसिक सुख की तुलना शारीरिक सुख ही महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षः

1. मूल्य शिक्षा को विद्यालय पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए।

10 2. विद्यालयों में मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

3. नोटिस बोर्ड/बुलेटिन बोर्ड पर महापुरूषों के आदर्श वचन/उपदेश अंकित किए जाने चाहिए।

4. शिक्षकों को मूल्यों की शिक्षा देने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

5. विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की कार्यप्रणाली, प्रबन्ध एवं प्रशासन मूल्य आधारित होना चाहिए, जिससे छात्रों एवं शिक्षकों पर इसका प्रभाव पड़े।

6. विद्यालयी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा की व्यवस्था इस रूप में विकसित होनी चाहिए, जिसमें ईमानदारी, निष्पक्षता, न्याय, अनुशासन, समर्पण, सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता, लोकतांत्रिकता आदि चारित्रिक मूल्य विद्यमान हों तथा जातिवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रीयता, असहिष्णुता, अनुशासनहीनता, शैक्षिक बेईमानी, भाई-भतीजावाद आदि का अभाव हो ।

7. राजनीतिज्ञों एवं राजनीतिक पार्टियों को किसी भी शिक्षा संस्थान में हस्तक्षेप करने से रोकने के लिए कानून बनाया जाना चाहिए।

8. शिक्षक एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों को किसी भी राजनैतिक पार्टी का सदस्य बनने एवं चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

9. किसी भी शिक्षा संस्थान में प्रवेश लेने के लिए दान अथवा केपिटेशन शुल्क का निषेध किया जाना चाहिए।

10. किसी भी राजनीतिक पार्टी द्वारा संस्थागत किसी भी छात्र को पार्टी की सदस्यता, पार्टी प्रचार एवं अन्य गतिविधियों में संलिप्त करने को कानून बनाकर दण्डनीय अपराध घोषित किया जाना चाहिए।

शिक्षा संस्थाओं में मूल्य शिक्षा दिए जाने के सम्बन्ध में शिक्षा आयोग ने लिखा है, "विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का व्यक्तित्व एवं व्यवहार और विद्यालयों में प्रदत्त सुविधाएँ मूल्यों की भावना विकसित करने में व्यापक कार्य करेंगे। हम बल देना चाहेंगे कि मूल्यों की जागरूकता विद्यालयों में समग्र पाठ्यक्रम एवं क्रियाओं के कार्यक्रम को अवश्य परिव्याप्त करे।"

मूल्य आधारित शिक्षा का आधारभूत पाठ्यक्रम राष्ट्रीय ढाँचें पर आधारित हो तथा प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय स्तरों पर मूल्य शिक्षा का उद्देश्य बालकों में भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति, आदर्शों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का ज्ञान करना होना चाहिए। शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरन्तर विकास करता है। शिक्षा जीवन है और जीवन ही शिक्षा है और यही कारण है कि जन जीवन स्थिर नहीं रहता तो शिक्षा स्थिर कैसे रह सकती है। विशिष्ट विद्यालय मूल्य निर्धारित शिक्षा के लिए स्थापित किये जाने चाहिए प्रत्येक राज्य में कम से कम एक ऐसा विद्यालय होना चाहिए जो कि नर्सरी स्तर से पोस्ट ग्रेजुएट स्तर तक मूल्य निर्धारित शिक्षा प्रदान करें। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा प्रेम पूर्वक जीवन यापन करना सीखे। शिक्षा से ऐसा मनुष्य बनाना है जो स्वेच्छा से भारतीय संस्कृति के पुरातन मूल्यों का पालन करें जिससे व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र का कल्याण सम्भव हो सकें।